मुंशी प्रेमचंद कृत उपन्यास
'निर्मला' की कथावस्तु की समीक्षा

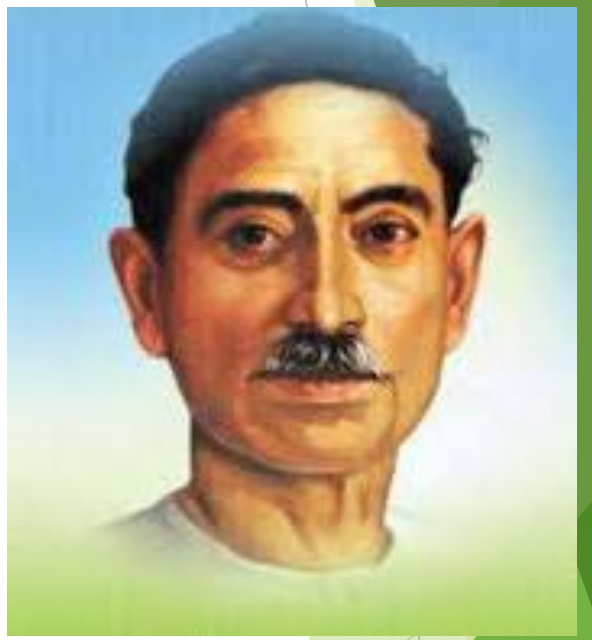

डॉ. राजेन्द्र सिंह

आचार्य, हिन्दी विभाग

Email : rajendersingh@mgcub.ac.in

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मोतिहारी, बिहार

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा छठा सेमेस्टर

पाठ्यक्रम : प्रेमचंद HIND 3026

मुंशी प्रेमचंद का जीवनकाल

31 जुलाई 1880 - 8 अक्तूबर 1936

- यह समय भारत में अंग्रेजों की गुलामी का समय था।
- लेखकों और सृजनकर्मियों पर अंग्रेजों की विशेष निगाह रहती थी।
- मुंशी प्रेमचंद की 'सोजेवतन' कहानी संग्रह को जब्त भी कर लिया गया था। इसका बड़ा कारण यही था कि इस संग्रह की कहानियों के पात्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनमानस का निर्माण करने की भूमिका निभा रहे थे।

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के एक अति महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध एवं आलोचना में बेहतरीन साहित्य की रचना की है।

लगभग 300 कहानियां लिखी। जो मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं।

बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, सत्याग्रह, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, नशा, सवा सेर गेहूं, पूस की रात इनकी सुप्रसिद्ध कहानियां हैं।

प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' और 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के मुख्य उपन्यास निम्न प्रकार हैं –

कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, प्रेमा, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प

'मंगलसूत्र' उनका अधूरा उपन्यास है, 'दुर्गादास' एक बालोपयोगी उपन्यास है

प्रेमचंद कृत 'निर्मला' एक सामाजिक उपन्यास

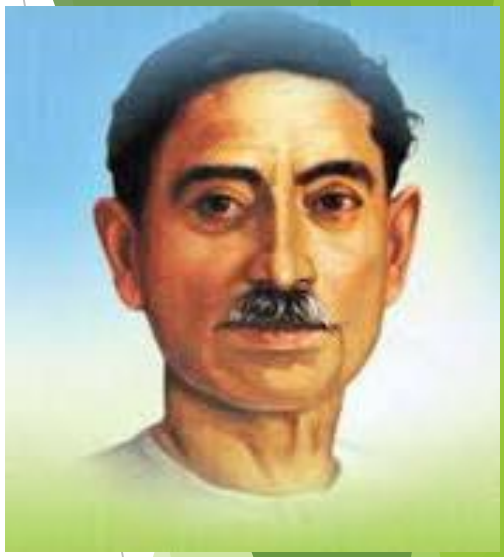

- 'निर्मला' मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित प्रसिद्ध एक सामाजिक उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन 1927 में हुआ था। सन 1926 में दहेज प्रथा और अनमेल विवाह को आधार बना कर इस उपन्यास का लेखन प्रारम्भ हुआ। इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली महिलाओं की पत्रिका 'चाँद' में नवम्बर 1925 से दिसम्बर 1926 तक यह उपन्यास विभिन्न किस्तों में प्रकाशित हुआ।

निर्मला : मुख्य बिन्दु

- स्त्री-केन्द्रित साहित्य के इतिहास में इस उपन्यास का विशेष स्थान है।
- इस उपन्यास की कथा का केन्द्र और मुख्य पात्र 'निर्मला' नाम की 15 वर्षीय सुन्दर और सुशील लड़की है।
- निर्मला का विवाह एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से कर दिया जाता है। जिसके पूर्व पत्नी से तीन बेटे हैं।
- निर्मला का चरित्र निर्मल है, परन्तु फिर भी समाज में उसे अनादर एवं अवहेलना का शिकार होना पड़ता है।
- उसकी पति-परायणता काम नहीं आती। उस पर सन्देह किया जाता है,
- परिस्थितियाँ उसे दोषी बना देती है।
- इस प्रकार निर्मला विपरीत परिस्थितियों से जूझती हुई मृत्यु को प्राप्त करती है।

- 'निर्मला' में अनमेल विवाह और दहेज प्रथा की दुखान्त कहानी है।
  - उपन्यास का लक्ष्य अनमेल-विवाह तथा दहेज प्रथा के बुरे प्रभाव को अंकित करता है।
    - निर्मला के माध्यम से भारत की मध्यवर्गीय युवतियों की दयनीय हालत का चित्रण हुआ है।
      - उपन्यास के अन्त में निर्मला की मृत्यू इस कुत्सित सामाजिक प्रथा को मिटा डालने के लिए एक भारी चुनौती है।
    - प्रेमचन्द ने भालचन्द और मोटेराम शास्त्री के प्रसंग द्वारा उपन्यास में हास्य की सृष्टि की है।
  - निर्मला के चारों ओर कथा-भवन का निर्माण करते हुए असम्बद्ध प्रसंगों का पूर्णतः बहिष्कार किया गया है।
- इससे यह उपन्यास सेवासदन से भी अधिक सुग्रंथित एवं सुसंगठित बन गया है।

  इसे प्रेमचन्द का प्रथम 'यथार्थवादी' तथा हिन्दी का प्रथम 'मनोवैज्ञानिक उपन्यास' कहा जा सकता है।
  - निर्मला का एक वैशिष्ट्य यह भी है कि इसमें 'प्रचारक प्रेमचन्द' के लोप ने इसे ने केवल कलात्मक बना दिया है, बल्कि प्रेमचन्द के शिल्प का एक विकास-चिन्ह भी बन गया है। .

‘निर्मला’ उपन्यास की कथावस्तु

उपन्यास में घटित घटनाएं ही कथावस्तु का रूप लेती हैं। बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा उपन्यास कथावस्तु के ही मुख्य आधार पर ही सृजित होता है।

उपन्यास की कथावस्तु में एक मुख्य कथा के साथ-साथ अनेक गौण कथाएं भी जुड़ी होती हैं, जिन्हें उपकथा या प्रासंगिक कथाएं भी कहते हैं।

मुख्य कथा - मुख्य कथा वह होती है जो प्रारंभ से लेकर अंत तक चले। ‘निर्मला’ उपन्यास में प्रेमचंद जी ने निर्मला के संपूर्ण जीवन को मुख्य कथा के रूप में चुना है। निर्मला के परिचय से लेकर दिहेज के कारण विवाह की बात टूटने, अनमेल विवाह होने, विवाहोपरांत अनेक दुखदायी घटनाएं, लड़की का पैदा होना, और अंत में मृत्यु को प्राप्त हो जाना आदि मुख्य कथा के ही अंतर्गत आती हैं।

उपकथा - जो कथाएं मुख्य कथा को अग्रसर करने में भूमिका निभाए, उन्हें उपकथा कहते हैं। निर्मला उपन्यास में अनेक उपकथाएं भी आई हैं। यथा निर्मला के पिता और मां की नोक-झोंक में एक गुंडे द्वारा उदयभानु लाल की हत्या किया जाना, पिता की हत्या हो जाने के बाद निर्मला के दुखद जीवन की शुरूआत होती है। अधेड़ उम्र के तोताराम से उसका विवाह होता है। उसके तीन लड़कों की उपकथाएं साथ-साथ चलती हैं। तोताराम की बहन की उपकथा भी साथ साथ चलती है। भालचंद्र और मोटेराम शास्त्री की उपकथा भी हास्य-व्यंग्य के लिए प्रेमचंद जी ने इस उपन्यास में डाली है ।

‘निर्मला’ की कथावस्तु के गुण

उपन्यासकार जिन तत्वों से उपन्यास की कथा को पाठक के लिए विश्वसनीस बना देता है, वे उस कथानक के गुण कहलाते हैं। मौलिकता, स्वाभाविकता, रोचकता, जिज्ञासावर्द्धक, उदात्त, समाज-संपृक्त और विस्तृत उद्देश्य उपन्यास के गुण हैं। निर्मला उपन्यास के गुण निम्न बिन्दुओं में देखे जा सकते हैं -

1. मौलिकता - मौलिकता दो रूपों में होती है। एक, बिल्कुल अज्ञात तथ्य को सामने लाना। और दूसरे, ज्ञात तथ्य को नए रूप में प्रकट करना।

दहेज हमारे समाज की एक ऐसी कुप्रथा थी जिससे महिलाओं का जीवन नरकतुल्य बनता जा रहा था। अभी भी यह अपने विकराल रूप में विद्यमान है। दहेज न देने के कारण निर्मला का विवाह अधेड़ उम्र के तातारम से होता है। और यह विवाह निर्मला के जीवन को तहस-नहस कर देता है

मुशी प्रेमचंद ने इसी कुप्रथा को कथावस्तु का आधार बनाकर ‘निर्मला’ उपन्यास की रचना की। उन्होंने यथार्थपरक और विश्वसनीय घ्टनाओं को लेकर उपन्यास लिखा। जिसे पढ़ते हुए पाठक रम जाता है।

यह एक मौलिक कथा है।

2. संवेगात्मकता – संवेगात्मकता का अर्थ है कि लेखक पात्रों एवं भावों की स्थिति का वर्णन इस सजीवता से करे कि पाठक को वे घटनाएं अपने ही आस पास घटित होती हुई दिखे और वह साधारणीकरण की स्थिति में पहुंच जाए। वह लेखक के साथ साथ चलने लगे। वह उपन्यास के पात्रों के सुख-दुख के साथ तादात्म्य बिठा ले। निर्मला से एक अंश दर्शनीय है –

'निर्मला के मन में उस पुरुष को देखने की प्रबल उत्कंठा हुई, जो उसकी अवहेलना करके अब उसकी बहिन का उद्धार करना चाहता हैं प्रायश्चित सही, लेकिन कितने ऐसे प्राणी हैं, जो इस तरह प्रायश्चित करने को तैयार हैं? उनसे बातें करने के लिए, नम्र शब्दों से उनका तिरस्कार करने के लिए, अपनी अनुपम छवि दिखाकर उन्हें और भी जलाने के लिए निर्मला का हृदय अधीर हो उठा। रात को दोनों बहिनें एक ही कमरे में सोई। मुहल्ले में किन-किन लड़कियों का विवाह हो गया, कौन-कौन लड़कोरी हुईं, किस-किस का विवाह धूम-धाम से हुआ। किस-किस के पति इच्छानुकूल मिले, कौन कितने और कैस गहने चढ़ावे में लाया, इन्हीं विषयों में दोनों मे बड़ी देर तक बातें होती रहीं। कृष्णा बार-बार चाहती थी कि बहिन के घर का कुछ हाल पूछूं, मगर निर्मला उसे पूछने का अवसर न देती थी। जानती थी कि यह जो बातें पूछेगी उसके बताने में मुझे संकोच होगा। आखिर एक बार कृष्णा पूछ ही बैठी-जीजाजी भी आयेंगे न?'

यह उद्धरण पढ़कर पाठक थोड़ी देर के लिए निर्मला के साथ खो जाता है कि वह किस प्रकार जिंदगी को झेल रही है।

- रोचकता - उपन्यासकार पाठकों की रुचि का अवश्य ख्याल रखता है। गंभीर से गंभीर प्रसंग में भी प्रेमचंद जी हास्य-व्यंग्य का पुट देने में माहिर थे। अधेड़ तोताराम से निर्मला का विवाह होता है तो उसका मित्र उसको कैसे मूर्ख बनाता है -

नयन- 'तो फिर रंगीलेपन का स्वांग रचो। यह ढीला-ढाला कोट फेंकों, तंजेब की चुस्त अचकन हो, चुन्नटदार पाजामा, गले में सोने की जंजीर पड़ी हुई, सिर पर जयपुरी साफा बांधा हुआ, आंखों में सुरमा और बालों में हिना का तेल पड़ा हुआ। तोंद का पिचकना भी जरूरी है। दोहरा कमरबन्द बांधे। जरा तकलीफ तो होगी, पार अचकन सज उठेगी। खिजाब मैं ला दूंगा। सौ-पचास गजलें याद कर लो और मौके-मौके से शेर पढ़ी। बातों में रस भरा हो। ऐसा मालूम हो कि तुम्हें दीन और दुनिया की कोई फिक्र नहीं है, बस, जो कुछ है, प्रियतमा ही है। जवांमर्दी और साहस के काम करने का मौका ढूंढते रहो। रात को झूठ-मूठ शोर करो-चोर-चोर और तलवार लेकर अकेले पिल पड़ो। हां, जरा मौका देख लेना, ऐसा न हो कि सचमुच कोई चोर आ जाऐ और तुम उसके पीछे दौड़ो, नहीं तो सारी कलई खुल जाऐगी और मुफ्त के उल्लू बनोगे। उस वक्त तो जवांमर्दी इसी में है कि दम साधे खड़े रहो, जिससे वह समझे कि तुम्हें खबर ही नहीं हुई, लेकिन ज्योंही चोर भाग खड़ा हो, तुम भी उछलकर बाहर निकलो और तलवार लेकर 'कहां? कहां?' कहते दौड़ो। ज्यादा नहीं, एक महीना मेरी बातों का इम्तहान करके देखें। अगर वह तुम्हारी दम न भरने लगे, तो जो जुर्माना कहो, वह दूं।'

उपन्यास में जब निर्मला का पिता उदयभुन लाल अपनी पत्नी से झगड़कर उसे सबक सिखाने के लिए घर से निकल जाता है तो एक मतई नामक गुंडे द्वारा उसकी हत्या कर जाती है। यह समय घर में लड़की की शादी का चल रहा है। लेखक ने किस प्रकार पाठक की उत्सुकता को जाग्रत किया, यह दर्शनीय है –

"यही सोचते हुए बाबू साहब गलियों में चले जा रहे थे, सहसा उन्हें अपने पीछे किसी दूसरे आदमी के आने की आहट मिली, समझे कोई होगा। आगे बढ़े, लेकिन जिस गली में वह मुड़ते उसी तरफ यह आदमी भी मुड़ता था। तब बाबू साहब को आशंका हुई कि यह आदमी मेरा पीछा कर रहा है। ऐसा आभास हुआ कि इसकी नीयत साफ नहीं है। उन्होंने तुरन्त जेबी लालटेन निकाली और उसके प्रकाश में उस आदमी को देखा। एक बरिष्ठ मनुष्य कन्धे पर लाठी रखे चला आता था। बाबू साहब उसे देखते ही चौंक पड़े। यह शहर का छटा हुआ बदमाश था। तीन साल पहले उस पर डाके का अभियोग चला था। उदयभानु ने उस मुकदमे में सरकार की ओर से पैरवी की थी और इस बदमाश को तीन साल की सजा दिलाई थी। सभी से वह इनके खून का प्यासा हो रहा था। कल ही वह छूटकर आया था।"

- **मानवीय दृष्टि – उपन्यास मानव जीवन की आलोचना है। इसमें मानवीय सच्चाइयों की परतें खोली जाती हैं। मुंशी प्रेमचंद इस हिसाब से भी एक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हैं। उनका उद्देश्य माव जीवन में हस्तक्षेप कर उसे सुखद बनाना है। निर्मला उपन्यास में एक घटना घटती है जब निर्मला के सारे गहने चोरी हो जाते हैं। ये गहने उसके जीवन का एक आधार थे, सहारा थे। वह जियाराम को गहने चुराकर ले जाते हुए भी देख लेती है परंतु किी भी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं करती। उसे इस बात का डर था कि कहीं पूरा परिवार न टूट जाए। परंतु फिर भी लोग उसे ही कसूरवार मानते हैं।**

"सहसा जियाराम ने कमरे में कदम रखा। उसके पांव थर–थर कांप रहे थे। उसने कमरे मे ऊपर–नीचे देखा। निर्मला सोई हुई थी, उसके सिरहाने ताक पर, एक छोटा–सा पीतल का सन्दूकचा रक्खा हुआ था। जियाराम दबे पांव गया, धीरे से सन्दूकचा उतारा और बड़ी तेजी से कमरे के बाहर निकला। उसी वक्त निर्मला की आंखें खुल गयीं। चौंककर उठ खड़ी हुई। द्वार पर आकर देखा। कलेजा धक् से हो गया। क्या यह जियाराम है? मेरे केमरे मे क्या करने आया था। कहीं मुझे धोखा तो नहीं हुआ? शायद दीदीजी के कमरे से आया हो। यहां उसका काम ही क्या था? शायद मुझसे कुछ कहने आया हो, लेकिन इस वक्त क्या कहने आया होगा? इसकी नीयत क्या है? उसका दिल कांप उठा।"

परिवार की परिस्थितियां कुछ इस प्रकार की बन रही थीं कि यदि वह चोरी का इल्जाम सरेआम जियाराम पर लगातीं तो उसे सौतेली मां के ताने सहने पड़ते। मुंशी प्रेमचंद जी ने इस उपन्यास में मानवीय विवशताओं को गहरे से महसूस किया है।

- स्वाभाविकता – स्वाभाविकता कथानक का एक महत्त्वपूर्ण गुण है। स्वाभाविकता ही पाठक मन पर गहरा असर दोड़ती है और उसे कोई कृति पढ़ने के लिए उकसाती है। यह स्वाभाविकता औपन्यसिक कृति को पाठक के व्यक्तिगत जीवन से जोड़ देती है। उसे कृति पढ़ते हुए ऐसा तगता है कि वह अपने यथार्थ समाज की सैर कर रहा है। मुंशी प्रेमचंद इस बारे में एक अप्रतिम साहित्यकार हैं। 'निर्मला' उपन्यास को पढ़ते समय कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि प्रेमचंद ने केवल कोरी कल्पनाओं के द्वारा यह उपन्यास घड़ा हो। उपन्यास के पात्र गहरे अंतर्द्वंद्वों में जीते हैं। खासकर मंसाराम का चरित्र तो इस उपन्यास में एक त्रासदी के रूप में आया है। प्रेमचंद ने जिसका बहुत ही सटीक वर्णन किया है –"मंसाराम ने अब तक निर्मला की ओर ध्यान नहीं दिया था। निर्मला का ध्यान आते ही उसके रोंये खड़े हो गये। हाय उनका सरल स्नेहशील हृदय यह आघात कैसे सह सकेगा? आह। मैं कितने भ्रम में था। मैं उनके स्नेह को कौशल समझता था। मुझे क्या मालूम था कि उन्हें पिताजी का भ्रम शांत करने के लिए मेरे प्रति इतना कटु व्यवहार करना पड़ता है। आह। मैंने उन पर कितना अन्याय किया है। उनकी दशा तो मुझसे भी खराब हो रही होगी। मैं तो यहां चला आय, मगर वह कहां जाऐंगी? जिया कहता था, उन्होंने दो दिन से भोजन नहीं किया। हरदम रोया करती हैं। कैसे जाकर समझाऊं। वह इस अभागे के पीछे क्यों अपने सिर यह विपत्ति ले रही हैं? वह बार-बार मेरा हाल पूछती हैं? क्यों बार-बार मुझे बुलाती हैं? कैसे कह दूं कि माता मुझे तुमसे जरा भी शिकायत नहीं, मेरा दिल तुम्हारी तरफ से साफ है।"

- **संगठनात्मकता एवं संबद्धता** – उपन्यास के कथानक में मुख्य कथा और प्रासंगिक कथाओं में परस्पर संबंध होना अति आवश्यक है। प्रासंगिक कथाएं भी कोरी कल्पना न हो बल्कि मूल कथा को आगे बढ़ाने वाली हो। प्रासंगिक कथाएं मुख्य कथा का विकास होती हैं।

'निर्मला' उपन्यास में निर्मला की मुख्य कथा के साथ और भी अनेक गौण या प्रासंगिक कथाएं जुड़ हुई हैं। परंतु प्रेमचंद ने उनका समावेश इस ढंग से किया है कि वे प्रासंगिक लगती ही नहीं। वे मुख्य कथा ही लगती हैं।

मसलन, मुंशी तोताराम की बहन की कथा, उदयभानुलाल और मतई की कथा, सियाराम और ढोंगी बाबा की कथा, सुधा और उसके पति की कथा

इन सब कथाओं का संगठन आपस में इतना गुंफित है कि लगता ही नहीं कि ये मूल कथा से अलग हैं। ये कथाएं कहीं न कहीं जाकर निर्मला से ही जुड़ जाती हैं। और निर्मला की करुण कथा को और प्रभावी रूप में कहने में सक्षम होती हैं।

कथावस्तु के विकास पद्धति

- कुछ पद्धतियां निम्नलिखित हैं –
  - कथात्मक
    - संवादात्मक
      - मनोविश्लेषणात्मक

समीक्षात्मक

पूर्वदीप्ति

भावात्मक

कथात्मक

इसे वर्णनात्मक पद्धति भी कहा जाता है। यह एक सामान्य पद्धति है। इसका एक नाम विवरणात्मक पद्धति भी है। किसी भी घटना का वर्णन या विवरण प्रस्तुत करना उपन्यास में आवश्यक होता है, जिससे उसकी विश्वासनीयता बढ़ती है। प्रेमचंद जी इसमें माहिर हैं। जब उदयभानु लाल के घर में हनर्मला के विवा की तैयारियां चल रही थीं, तो किस प्रकार का वातावरण था,

"बाबू उदयभानुलाल का मकान बाजार बना हुआ है। बरामदे में सुनार के हथौड़े और कमरे में दर्जी की सुईयां चल रही हैं। सामने नीम के नीचे बढ़ई चारपाइयां बना रहा है। खपरैल में हलवाई के लिए भट्ठा खोदा गया है। मेहमानों के लिए अलग एक मकान ठीक किया गया है। यह प्रबन्ध किया जा रहा है कि हरेक मेहमान के लिए एक-एक चारपाई, एक-एक कुर्सी और एक-एक मेज हो। हर तीन मेहमानों के लिए एक-एक कहार रखने की तजवीज हो रही है। अभी बारात आने में एक महीने की देर है, लेकिन तैयारियां अभी से हो रही हैं। बारातियों का ऐसा सत्कार किया जाऐ कि किसी को जबान हिलाने का मौका न मिले। वे लोग भी याद करें कि किसी के यहां बारात में गये थे। पूरा मकान बर्तनों से भरा हुआ है। चाय के सेट हैं, नाश्ते की तश्तरियां, थाल, लोटे, गिलास। जो लोग नित्य खाट पर पड़े हुक्का पीते रहते थे, बड़ी तत्परता से काम में लगे हुए हैं। अपनी उपयोगिता सिद्ध करने का ऐसा अच्छा अवसर उन्हें फिर बहुत दिनों के बाद मिलेगा। जहां एक आदमी को जाना होता है, पांच दौड़ते हैं। काम कम होता है, हुल्लड़ अधिक। जरा-जरा सी बात पर घण्टों तर्क-वितर्क होता है और अन्त में वकील साहब को आकर निर्णय करना पड़ता है। एक कहता है, यह घी खराब है, दूसरा कहता है, इससे अच्छा बाजार में मिल जाऐ तो टांग की राह से निकल जाऊं। तीसरा कहता है, इसमें तो हीक आती है। चौथा कहता है, तुम्हारी नाक ही सड़ गई है, तुम क्या जानो घी किसे कहते हैं। जब से यहां आये हो, घी मिलने लगा है, नहीं तो घी के दर्शन भी न होते थे! इस पर तकरार बढ़ जाती है और वकील साहब को झगड़ा चुकाना पड़ता है।"

संवादात्मक पद्धति

इसे नाटकीय शैली भी कहते हैं। संवादों के माध्यम से उपन्यास में कथा का विकास होता है। पात्रों की मनःस्थिति का भी पता चलता है। प्रेमचंद संवादात्मक पद्धति के भी एक सिद्धहस्त कथाकार हैं। निर्मला उपनयास में उन्होंने इतने अधिक मार्मिक संवादों की रचना की है कि पाठक भावुक हो जाता है। एक उदाहरण दर्शनीय है –

- कल्याणी–तुमसे दुनिया की कोई भी बात कही जाती है, तो जहर उगलने लगते हो। इसलिए न कि जानते हो, इसे कहीं टिकना नहीं है, मेरी ही रोटियों पर पड़ी हुई है या और कुछ! जहां कोई बात कही, बस सिर हो गये, मानों मैं घर की लौंडी हूं, मेरा केवल रोटी और कपड़े का नाता है। जितना ही मैं दबती हूं, तुम और भी दबाते हो। मुफ्तखोर माल उड़ायें, कोई मुंह न खोले, शराब–कबाब में रूपये लुटें, कोई जबान न हिलाये। वे सारे कांटे मेरे बच्चों ही के लिए तो बोये जा रहे है।
- उदयभानु लाल– तो मैं क्या तुम्हारा गुलाम हूं?
- कल्याणी– तो क्या मैं तुम्हारी लौंडी हूं?
- उदयभानु लाल– ऐसे मर्द और होंगे, जो औरतों के इशारों पर नाचते हैं।
- कल्याणी– तो ऐसी स्त्रियों भी होंगी, जो मर्दों की जूतियां सहा करती हैं।
- उदयभानु लाल– मैं कमाकर लाता हूं, जैसे चाहूं खर्च कर सकता हूं। किसी को बोलने का अधिकार नहीं।

इन संवादों से एक स्त्री के मन की पीड़ा उजागर होती है कि कैसे वह पुरुष के षिकंजे में स्वयं को आहत महसूस कर रही है।

मनोविश्लेषणात्मक पद्धति

- इस पद्धति में पात्रों की सूक्ष्म मनोभावनाओं का दिग्दर्शन कराना होता है। परिस्थितियां उसके ऊपर किस प्रकार का असर डाल रही हैं। वह परिस्थितियों से किस प्रकार प्रभावित हो रहा है और उसके व्यवहार में परिस्थितिजन्य किस प्रकार का बदलाव आ रहा है, ये सब बातें इस पद्धति में ही आती हैं। 'निर्मला' उपन्यास में अनमेल विवोपरांत निर्मला का जीवन लगातार निराशा में डूबता चला गया।

"निर्मला को अब अगर कुछ अच्छा लगता था, तो वह सुधा से बात करना था। वह वहां जाने का अवसर खोजती रहती थी। बच्ची को अब वह अपने साथ न ले जाना चाहती थी। पहले जब बच्ची को अपने घर सभी चीजें खाने को मिलती थीं, तो वह वहां जाकर हंसती–खेलती थी। अब वहीं जाकर उसे भूख लगती थी। निर्मला उसे घूर–घूरकर देखती, मुटिठयां–बांधकर धमकाती, पर लड़की भूख की रट लगाना न छोड़ती थी। इसलिए निर्मला उसे साथ न ले जाती थी। सुधा के पास बैठकर उसे मालूम होता था कि मैं आदमी हूं। उतनी देर के लिए वह चिंताआं से मुक्त हो जाती थी। जैसे शराबी शराब के नशे में सारी चिन्ताएं भूल जाता है, उसी तरह निर्मला सुधा के घर जाकर सारी बातें भूल जाती थी। जिसने उसे उसके घर पर देखा हो, वह उसे यहां देखकर चकित रह जाता। वहीं कर्कशा, कटु–भाषिणी स्त्री यहां आकर हास्यविनोद और माधुर्य की पुतली बन जाती थी। यौवन–काल की स्वाभाविक वृत्तियां अपने घर पर रास्ता बन्द पाकर यहां किलोलें करने लगती थीं। यहां आते वक्त वह मांग–चोटी, कपड़े–लत्ते से लैस होकर आती और यथासाध्य अपनी विपत्ति कथा को मन ही में रखती थी। वह यहां रोने के लिए नहीं, हंसने के लिए आती थी।"

- समीक्षात्मक पद्धति – इसमें उपन्यासकार उपन्यास में उपस्थित परिस्थितियों की साथ-साथ समीक्षा करता चलता है।
- पूर्वदीप्ति – इसे पर्वस्मरण भी कह सकते हैं। जब कोई घटना पहले छूट गई हो तो लेखक किसी पात्र द्वारा उसे याद करवाता है। अंग्रजी में इसे फलैसबैक कहते हैं।
- काव्यात्मक या भावात्मक पद्धति – अलंकृत शब्दावली में या पद्यात्मक शब्दावली में जब स्थितियों का वर्णन किया जाए तो यह भावात्मक पद्धति होती है। प्रेमचंद जी इसमें भी सिद्धहस्त हैं।

निष्कर्ष

- 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु एक सशक्त कथावस्तु है।
  - 'निर्मला' उपन्यास में मुख्य कथा के साथ साथ अनेक उपकथाओं की संयोजना है
    - 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु एक मौलिक कथावस्तु है
    - 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु में उनका मानवीय रूप उभर कर सामने आया है
    - 'निर्मला' उपन्यास का कथानक स्वाभाविक है और अनेक कथाओं के साथ संबद्ध है
    - 'निर्मला' उपन्यास पढ़ते समय पाठक की रुचि लगातार बढ़ती जाती है।
    - उपन्यासकार ने कथात्मक, संवादात्मक, मनोविश्ले-णात्मक, समीक्षा, और भावात्मक पद्धतियों से उपन्यास को लिखा है।
    - कह सकते हैं कि यह उपन्यास कथानक या कथवस्तु के आधार पर एक सफल उपन्यास है।

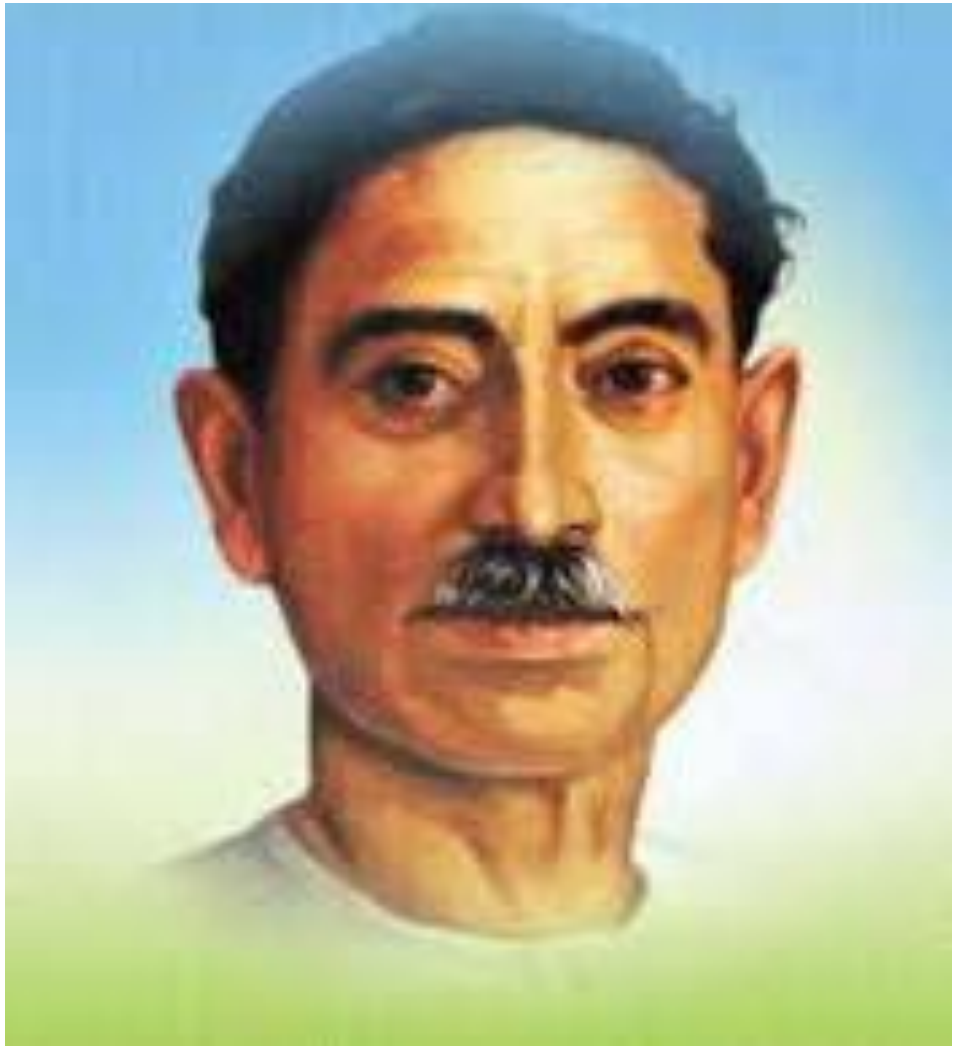

धन्यवाद